चतुर्थ अध्याय

"विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ"

चतुर्थ अध्याय

"विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ"

विषय-प्रवेश :

मनुष्य और समस्या का अटूट और गहरा रिश्ता है। मनुष्य जीवन में यदि समस्या न हो तो उसका जीवन निरर्थक हो जाएगा। समस्याओं ने मनुष्य को अपने चंगुल में फँसा लिया है। उस चंगुल से वह जितना मुक्त होना चाहता है, उतना ही वह उस समस्याओं में उलझ जाता है। डॉ. सीलम वेंकटेश्वरराव के मतानुसार - "शरीर और छाया या आत्मा एवं शरीर का जो नित्य एवं शाश्वत संबंध है, वही संबंध 'समस्या' एवं मनुष्य जीवन का है।"[1] अत: स्पष्ट है कि समस्या न होती तो मनुष्य सभ्यता का विकास भी संभव न होता।

आधुनिक युग में मानव ने विज्ञान का सहारा लेकर प्रगति के द्वार खोले हैं, साथ ही साथ जटिलताओं को भी जन्म दिया है। आज मनुष्य भौतिक सुख पाने के लिए हर समय कार्यरत रहने लगा है। मनुष्य कल्पनाओं को वास्तव रूप देते समय, अपने सपने दूर करते समय जो-जो बाधाएँ, रुकावटें उसके सामने उपस्थित होती हैं, वे ही समस्याएँ हैं। मनुष्य अपनी जितनी उन्नति करना चाहता है, उतनी ही उसके जीवन में समस्याएँ बढ़ जाती हैं। सही अर्थों में समस्या याने जीवन यापन में मनुष्य के सामने उपस्थित चुनौती है। कभी-कभी समस्याएँ इतनी जटिल बन जाती है कि उसे सुलझाने में उसे अपनी आत्मानुभूति भी देनी पड़ती है। वर्तमान युग में अब जो समस्याएँ हैं, उससे कहीं अलग समस्याएँ प्राचीन काल में हुई होगी। मनुष्य जीवन हमेशा परिवर्तनशील रहा है। वह हमेशा युग के साथ बदलता रहा है। बदलते युग के साथ बदलती समस्याओं पर प्रकाश डालने से पहले 'समस्या शब्द की व्युत्पत्ति', 'समस्या शब्द का अर्थ', परिभाषा आदि बातों प्रकाश डालना भी आवश्यक है -

---

1. डॉ. सीलम वेंकटेश्वरराव - यशपाल के उपन्यास : समस्यामूलक अध्ययन, पृष्ठ - 24

4.1 'समस्या' शब्द की व्युत्पत्ति :

'समस्या' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'सम्' उपसर्ग तथा 'अस' धातु के संयोग से हुई है। 'सम' का अर्थ है ... 'एकत्र' तथा 'अस' का अर्थ है ... 'फेंकना' या 'रखना'। अर्थात् एकत्र रखना तथा फेंकना के संयोग से समस्या की व्युत्पत्ति होती है।

4.2 'समस्या' शब्द का अर्थ :

हिंदी के विभिन्न कोशकारों ने 'समस्या' शब्द के विभिन्न अर्थ प्रस्तुत किए हैं। उनका संक्षिप्त अवलोकन इस प्रकार द्रष्टव्य है, जैसे -

'हिंदी शब्दसागर' में समस्या शब्द का अर्थ इस तरह दिया है - ''संज्ञा स्त्री. (सं.) 1. संघटन 2. मिलने की क्रिया, मिश्रण 3. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिये तैयार करके दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है। क्रि.प्र. - देना। पूर्ति करना 4. कठिन अवसर या प्रसंग। कठिनाई। जैसे - इस समय तो उनके सामने कन्या के विवाह की एक बड़ी समस्या उपस्थित है।''[1]

अत: स्पष्ट है कि साहित्य में किसी काव्य ज्ञान की जाँच करने के लिए काव्य तथा श्लोक अथवा छंद का अंतिम पद उसके सामने रखा जाता था और उस व्यक्ति को उसके आधार पर उस अंतिम पद को पूर्ण करना होता था। अर्थात् वह चुनौती ही उसके सामने समस्या ही होती है।

'मानक हिंदी शब्दकोश' में समस्या शब्द का अर्थ है - ''स्त्री. (सं) वह उलझनवाली विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सके, कठिन या विकट प्रसंग (प्राब्लेम); छंद आदि का वह अंतिम चरण या पद जो पूरा छंद बनाने के लिए कवियों के सामने रखा जाता है।''[2]

'राजपाल हिंदी शब्दकोश' में डॉ. हरदेव बाहरी ने समस्या का अर्थ इस तरह दिया है - ''सं. (स्त्री) 1. कठिन या विकट प्रसंग 2. कठिन विषय।''[3]

---

1. सं.डॉ. श्यामसुंदरदास - हिंदी शब्दसागर, भाग-10, पृष्ठ - 4967
2. सं.डॉ. शिवप्रसाद भादद्वाज शास्त्री - मानक हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 1006
3. डॉ. हरदेव बाहरी - राजपाल हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 805

'भाषा-शब्द कोश' के अनुसार - ''(संज्ञा, स्त्री, सं.) कठिन या जटिल प्रश्न, गूढ़ या गहन बात, उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पद्य का अंतिमांश जिसके आधार पर पूर्ण पद्य रचा जाता है, संघटन, मिश्रण, मिलाने का भाव या क्रिया।''[1]

'समस्या' शब्द के अर्थों से यह स्पष्ट होता है कि कोई भी कठिनतम बात हो या उलझनवाली बात, वही समस्या पैदा करती है। जिसका हल ढूँढ़ने के लिए मनुष्य को अपने विवेक से काम लेना पड़ता है। उसका सद्सद् विवेक ही समस्या का निराकरण कर सकता है।

4.3 'समस्या' शब्द की परिभाषा :

डॉ. विमल भास्कर ने 'समस्या' शब्द की परिभाषा इस प्रकार दी है - ''मनुष्य इच्छाओं का दास है और इच्छाएँ सदैव अतृप्त रहती हैं, यही अतृप्ति कालांतर में जीवन में समस्याओं का जाल-सा फैला देता है। आज युग में तो समस्याएँ जीवन के लिए इतनी बढ़ गई है कि उनके कारण जीवन स्वयं एक समस्या हो गया है।''[2] अत: स्पष्ट है कि इच्छाओं की अतृप्ति होने के कारण समस्याओं का निर्माण होता है।

'समस्या' के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. विमल भास्कर ने कहा है - ''वर्तमान युग की समस्याएँ तो कुछ दूसरे रंग में रंगी हुई है। कारण यह है कि आज का व्यक्ति यदि एक ओर पुराने संस्कारों और मान्यताओं से बँधा रहना चाहता है, तो दूसरी ओर उन्हें छोड़कर नए संस्कार ग्रहण का संघर्ष भी वह निरंतर कर रहा है। इस संघर्ष में वह कहीं-कहीं पथ भ्रष्ट हो गया है। वस्तुत: वर्तमान युग समस्याओं का युग है।''[3] अत: कहना सही होगा कि पुराने और नए संस्कारों के बीच संघर्ष होने के कारण भी अनेक समस्याओं का निर्माण हो रहा है। इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि अभावों की पूर्ति न होने के कारण अनेक समस्याएँ निर्माण होती हैं। उसके विकास के लिए मनुष्य को समस्याओं का निराकरण करना जरूरी होता है।

---

1. सं.डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल' - भाषा शब्दकोश, पृष्ठ - 1521
2. डॉ. विमल भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य, पृष्ठ - 10
3. वही, पृष्ठ - 9

4.4 नारी समस्याओं का चित्रण :

प्रारंभिक काल में नर और नारी समानाधिकारी थे । नारी स्वतंत्र थी लेकिन पुरुषों की अधिकार भावना के कारण स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रहना पड़ता था। कालांतर में नारियों में शिक्षा का विकास हुआ है, नारियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है फिर भी नारियाँ सामाजिक बंधनों में बँधी हैं। प्रा. अर्जुन घरत के शब्दों में - ''सेवा और त्याग की मूर्ति नारी को भारतीय पुरुषप्रधान समाज द्वारा शोषित, अशिक्षित और हीनवृत्ति का शिकार होना पड़ा।''[1] आधुनिक नारियाँ शिक्षा का प्रचार-प्रसार होने के कारण स्वतंत्र हुई हैं फिर भी आज नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अनेक समस्याओं का सामना करते हुए नारी को अपनी बली तक देनी पड़ती है। आधुनिक युग में नौकरीपेशा नारी और उच्चशिक्षित नारियों की समस्या अधिक मात्रा में दिखायी देती है।

डॉ. उमा शुक्ल के मतानुसार - ''भारतीय समाज में समस्या सदैव नारी के साथ रही है, क्योंकि पारंपरिक जीवन-मूल्यों के निर्वाह को सदैव नारी के साथ जोड़ा गया है।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि पारंपरिक जीवन मूल्यों का उल्लंघन नारी नहीं कर सकती है। फिर भी आज की नारी अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करने के लिए परंपरागत मूल्यों को तोड़ रही है। वह अन्याय के विरूद्ध विद्रोह करती हुई दिखाई है।

4.5 विवेच्य उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ :

समाज को गतिमान रखने के लिए नारी और पुरुष की पूर्णता को अत्यंत महत्त्व है। इसमें पुरुष से अधिक नारी का सहभाग होता है। नारी पुरुष के जीवन में माँ, बहन, पत्नी, कन्या आदि रूपों का दायित्व वहन करती है। इतना होकर भी उसे हीन समझकर उस पर मनमाने तरीकों से अधिकार तथा रोब जमाया जाता है। विवेच्य उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याओं को सुरेंद्र वर्मा जी ने अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है -

---

1. प्रा. अर्जुन घरत - नागार्जुन के नारी पात्र, पृष्ठ - 68
2. डॉ. उमा शुक्ल - मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी : विविध भूमियाँ, पृष्ठ - 102

4.5.1 अकेलेपन की समस्या –

मनुष्य समाज प्रिय प्राणी है। इसीलिए उसे अकेलापन पसंद नहीं। अकेलेपन से वह घबराता है। फिर भी दुनिया में जाने ऐसे कितने लोग हैं जिन्हें अकेलेपन की समस्या का सामना करना पड़ता है। फिर भी अपने परिवार और अपने लोगों के बीच होते हुए भी इन्सान कभी-कभी खुद को अकेला महसूस करता है। डॉ. ज्ञानवती अरोडा के मतानुसार – ''व्यक्ति की विवशता यही रही है कि इतने संबंधों के बावजूद वह अलगाव महसूस करने लगा। वह न तो किसी का बन सका न किसी को अपना बना सका। व्यक्ति संबंधों का विघटन बड़े पैमाने पर हुआ।''[1] अत: स्पष्ट है कि खुद के कामों में व्यस्त होने के कारण दूसरों के लिए वक्त ही नहीं दे पाता है। अत: व्यक्ति-व्यक्ति में अलगाव होने के कारण अकेलापन महसूस करते हैं।

सुरेंद्र वर्मा के 'अंधेरे से परे' में अकेलेपन की समस्या को वाणी मिली है। बिंदो की माँ उनके पति की मृत्यु के बाद अकेलापन महसूस करती है। बिंदो की शादी हो चुकी है और वह मायके रहती है। एक दिन बिंदो और जित्तन में नौकरी को लेकर अनबन होती है। रोजमर्रा की इस तनावभरे माहौल से तंग आकर जित्तन घर छोड़कर चला जाता है। बिंदो की ममा को बहुत बुरा लगता है – ''तुम सब मेरे घर रहने के लिए आये थे यह मैं भूल जाऊँगी और पहले जैसे अकेले में दिन बिताऊँगी।''[2] अत: स्पष्ट होता है कि ममा अकेलेपन से तंग आ चुकी है।

सुरेंद्र वर्मा के 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में अपने अरमानों को उजागर करनेवाली वर्षा वशिष्ठ के अकेलेपन को प्रस्तुत किया है। नाटक और फिल्म इस दुहरे कलाकर्म के लिए परिवार को छोड़कर वह मुंबई, दिल्ली जैसे महानगर में चली जाती है। दिल्ली में हर्ष से उसकी मुलाकात होती है। हर्ष की अनुपस्थिति में वर्षा को दिल्ली नीरस लगने लगती है। हर्ष 'कंपन' फिल्म में मुख्य भूमिका मिलने के कारण मुंबई जाता है। प्रजातंत्र के अवसर पर वर्षा का कौमार्य भंग करता है। 'विषकन्या' नाटक के दौरान वर्षा का अकेलापन और खौलने लगता है। वर्षा नाट्यक्षेत्र में तरक्की

---

1. डॉ. ज्ञानवती अरोडा – सामाजिक हिंदी कहानी में बदलते पारिवारिक संबंध, पृष्ठ – 23
2. सुरेंद्र वर्मा – अंधेरे से परे, पृष्ठ – 112

करती है। वर्षा के मित्र और सहेलियाँ एक-दूसरे से अलग हो गए थे। उनकी पूछताछ करने पर भी किसी का पता नहीं मिल रहा था। वर्षा अकेलेपन से संत्रस्त होकर कहती है - ''सब अपनी-अपनी दुनिया में मगन हैं। किसी को मेरी परवाह नहीं।''[1] अत: स्पष्ट होता है कि वर्षा अकेलेपन से उदास दिखायी देती है। वर्षा घर आती है तो सुजाता का फोन भी नहीं आता है और हर्ष की चिट्ठी भी। सतवंती भी उसके पास नहीं है। इसी कारण वर्षा अकेलापन महसूस करती है। हर्ष की मृत्यु पर उसका अकेलापन और भी बढ़ता जाता है। वर्षा बिना विवाह संतान को जन्म देती है।

अकेलेपन में तरतीब और व्यवस्था की कमी होती है। वर्षा जिंदगी भर रहने को तो अकेली रह गई लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से उसे सभी की जरूरत है। अकेलेपन के अहसास का मुख्य कारण यही है कि वह अकेली है, अविवाहित है। हर्ष की मृत्यु के बाद वह अकेलापन महसूस करती है। इस अकेलेपन को दूर करने के लिए उसके सामने सिद्धार्थ शादी का प्रस्ताव रखता है लेकिन हर्ष की मृत्यु के हादसे से वह संवर नहीं जाती है। वर्षा के बारे में सिद्धार्थ कहता है - ''जिन्होंने आर्थिक, सामाजिक संघर्षों से उपजे सामान्य भारतीय स्त्री के अकेलेपन और पीड़ा का अत्यंत संवेदनशील और मार्मिक रूपायन किया है।''[2] अत: स्पष्ट होता है कि वर्षा अर्थाभाव और रूढी-परंपरा को न मानकर घर की दहलीज को पार करती है।

वर्षा घर छोड़कर अभिनय के क्षेत्र में जाती है तो उसकी मुलाकात दिव्या कत्याल से होती है। वर्षा दिव्या को अपना सब कुछ मानती है। दिव्या के साथ वह दिल खोलकर बातें करती है। दिव्या सब छोड़कर चली जाती है, तब वर्षा कहती है - ''मुझे छोड़कर मत जाना ... मैं घुट-घुटकर मर जाऊँगी। ... मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती ... मुझे मंझधार में मत छोड़ो ...।''[3] अत: स्पष्ट होता है कि वर्षा दिव्या जाने की कल्पना से पूरी तरह टूट जाती है। वर्षा अपने आप पर काबू नहीं रख सकती है। दिव्या नहीं है यह बात वर्षा सोच भी नहीं सकती। वह कहती है - ''मैं यहाँ एक दिन नहीं जी सकती तुम्हारे बिना ... तुम जिस गाड़ी से जाओगी, मैं उसी के नीचे कट जाऊँगी ...।''[4] इस कथन से स्पष्ट होता है कि दिव्या जानेवाली है यह

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 258
2. वही, पृष्ठ - 364
3. वही, पृष्ठ - 56
4. वही

बात भी मन में आती है तो उसके सामने उसका अकेलापन दिखाई देता है, जिसका अहसास उसे दिव्या जाने के पहले हो रहा है।

हर्ष की माँ भी अपने पति की मृत्यु के बाद अकेलापन महसूस करती है। हर्ष के परिवार में सुजाता और उसकी माँ है। जब हर्ष फिल्म क्षेत्र में पदार्पण करता है तब उसकी माँ को अच्छा नहीं लगता है। माँ बूढ़ी हो जाने के कारण उसे घर में अकेले रहना पसंद नहीं है। हर्ष की मृत्यु होने पर उसके अकेलेपन में और बढ़ौत्तरी होती है। माँ पूरी तरह से टूट जाती है। उसे जीवन जीना असह्य हो जाता है क्योंकि अकेलेपन के सिवा उसका और कोई साथी इस दुनिया में नहीं रहता।

जैनेट अपने मित्र मिक से अलग होने के कारण अकेलापन महसूस करती है। जैनेट अपना अकेलापन दूर करने के लिए दक्षिण-पूर्व एशिया, काठमांडू और तिब्बत जाना चाहती है। वह वर्षा के साथ लेस्बियन संबंध रखना चाहती है। अकेलेपन से तंग आकर जैनेट पागल की तरह बातें करने लगती है। उसे अकेलापन सहा नहीं जाता है। 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में वर्षा का अकेलापन, जैनेट का और हर्ष की माँ का अकेलापन दिखाकर लेखक ने अकेलेपन की समस्या को यहाँ चित्रित किया है।

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में श्रीमती दस्तूर और कुमुद के माध्यम से अकेलेपन की समस्या को स्पष्ट किया है। श्रीमती दस्तूर के पति का तीन साल पहले देहांत हो जाने के कारण वह अकेलेपन से त्रस्त है। उन्नीस साल के बाद श्रीमती दस्तूर का विवाह फिरोज के साथ हुआ। उसका वैवाहिक जीवन अच्छा चल रहा था। लेकिन उन्होंने भी अपना एक वर्ष पति फिरोज के बिना जिया था। इसी तरह कुमुद अपने एक साल के अकेलेपन से तंग आ चुकी है। अंतत: कहना आवश्यक नहीं कि विवेच्य उपन्यासों में अकेलेपन की समस्या का चित्रण अधिक मात्रा में दृष्टिगोचर होता है।

4.5.2 दहेज की समस्या –

लड़की के विवाह के समय दहेज देने की प्रथा बहुत पुरानी है। प्राचीन काल में दहेज देना कुप्रथा न होकर एक निर्दोष हानिरहित रिवाज था। लेकिन भारतीय जनमानस का कोई भी वर्ग न आज दहेज प्रथा से मुक्त है, न सदियों पहले था। आज वह शोषण का एक ढंग बन गया है। कई लड़कों के पिता अपने लड़के की शादी में दहेज माँगते हैं। हर लड़की के मन में विवाह से पूर्व एक तरह की कुण्ठा होती है। विवेच्य उपन्यास में दहेज की समस्या का चित्रण ज्यादा मात्रा में मिलता है।

विवेच्य उपन्यासों में नारी जीवन से संबंधित दहेज जैसी प्रधान समस्या को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। प्राचीन काल में दहेज समस्या नहीं थी। लोग अपनी बेटी का विवाह आभूषणों से अलंकृत करके करते थे। प्राचीन काल में लड़की के माता-पिता दामाद को अपनी कन्या सौंपने के साथ वस्त्र तथा आभूषण भी उपहार में देते थे। आज तो दहेज एक मध्यवर्गीय समाज की घृणित बीमारी ही बन गई है। आज विवाह के लिए दहेज आवश्यक मांना जाता है। कोई भी पिता इस समस्या का आसानी से समाधान नहीं कर पाता है।

'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास की युवती गायत्री दहेज की समस्या से पीड़ित है। गायत्री के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वह दिखने में सुंदर, स्वभाव से बहुत शांत और सुशील लड़की है। गायत्री के पास इतना सब कुछ होते हुए भी घर की आर्थिक कमजोरी के कारण विवाह होने में कई कठिनाईयाँ आती हैं। गायत्री के घरवाले इस कारण परेशान हो गए हैं – ''शर्मा परिवार में गायत्री के विवाह का मुद्दा अब तक का सबसे घनघोर संकट था। नकद बिल्कुल नगण्य था, पिता की कोई सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं थी, लड़की के पास कोई ऊँची शिक्षा नहीं थी ... सिर्फ रूप था। चार-पाँच प्रस्तावों की असफलता के बाद माँ-बाप और भाई की व्यवहार-बुद्धि चौकन्नी हो गयी थी।''[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि बेटी की शादी के लिए पिता का समाज में प्रतिष्ठित होना जरूरी माना जाता है ताकि वे बेटी की शादी में दहेज दे सकें। बेटी की शादी याने परिवार के सभी सदस्यों में चिंता का विषय होता

---

1. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 345

है। गायत्री के घर दो बहनें और दो भाइयों की पढ़ाई का खर्चा शुरू होने के कारण पिताजी को आर्थिक परिस्थिति का सामना करना पड़ता है।

4.5.3 अंधविश्वास की समस्या –

हजारों वर्षों से भारतीय समाज में रूढ़ि-परंपरा, अंधविश्वासों को प्रश्रय प्राप्त हुआ है। जहाँ पहले विश्वास, श्रद्धा एवं सेवा थी वही आज धार्मिक ठेकेदारी, छलकपट करना, मठाधीश होना एवं आत्मकल्याण की भावना तक ही धर्म का स्वरूप सीमित हो चुका है। भाऊसाहेब परदेशी के मतानुसार – ''वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरूप सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों के नीचे की जमीन खिसक गई है। फिर भी मानव मन में से उन्हें जड़ सहित उखाड़ फेंकना असंभव तो नहीं पर कठिन अवश्य है।''[1] अत: स्पष्ट होता है कि मनुष्य कितना भी पढ़ा-लिखा क्यों न हो लेकिन उसमें थोड़ी-बहुत मात्रा में क्यों न हो लेकिन अंधविश्वास दिखाई देता है। समाज आज भी जादू-टोना, मंत्र-तंत्र, मनौती, भूत-प्रेत आदि पर आँखें मूँद कर विश्वास करता है।

'मुझे चाँद चाहिए' की चारुश्री पढ़ी-लिखी नारी है। आज नारी एक ओर पुरुष के कंधे से कंधा लगाकर चलने की बात करती है तो दूसरी ओर अंधविश्वास की शिकार बनी हुई नजर आती है। वर्षा और चारुश्री फिल्म 'कंपन' की चर्चा करती हैं। इस फिल्म में चारुश्री और हर्ष एक साथ काम करते हैं। फिल्म हिट हो जाए इसीलिए चारुश्री मंदिर जाती है। वह वर्षा से कहती है – ''शाम को बिड़ला मंदिर में चढ़ावा भेज रही हूँ कि हे भगवान, फिल्म चल जाए।''[2] अत: स्पष्ट है कि पढ़ी लिखी नारी भी अंधविश्वास में विश्वास रखती है। आज की ज्यादातर पढ़ी-लिखी युवतियाँ और युवक अंधविश्वास करते हुए परिलक्षित होते हैं। गाँव के लोग मेरा संसार ठीक तरह चलें, खेतों में अनाज की भरमार हो इसलिए ईश्वर को प्रसाद चढ़ाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वैज्ञानिक युग में भी नारियाँ अंधविश्वास को मानती हैं। प्रस्तुत उपन्यास की वर्षा बी.ए. तक पढ़ाई पूरी कर नौकरी करना चाहती है। घरवाले पढ़ाई के लिए साफ-साफ इन्कार कर देते हैं कि हम किसी प्रकार की मदद नहीं करेंगे,

---

1. डॉ. भाऊसाहेब परदेशी तथा डॉ. शिवाजी देवरे – राजेंद्र यादव का रचना संसार, पृष्ठ – 52
2. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 267

तो वर्षा मिस दिव्या कत्याल और सिंहल सर की मदद लेती है। वह अभिनय के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री बनने का निश्चय करती है। वह भगवान के सामने मनौती भी माँगती है – ''उसने मन्नत माँग ली थी, अगर जीती-जागती, सही सलामत जून तक पहुँच गई, तो ग्यारह रुपए का प्रसाद चढाऊँगी।''[1] अत: स्पष्ट है कि वर्षा जैसी कई नारियाँ भगवान को अपनी इच्छापूर्ति के लिए मिन्नते माँगती हैं। इस तरह वर्षा और चारुश्री जैसी युवतियाँ पढ़ी-लिखी होकर भी अंधविश्वास और मनौती जैसी समस्या के अधिन हो जाती है। धार्मिक अंधविश्वास क़ा शिकार मनुष्य शुरू से रहा है। चाहे पढ़ा-लिखा महत्त्वाकांक्षी शहरी हो या अनपढ़-गँवार, कोई भी हो। इससे कोई अछूता नहीं रहा।

4.5.4 विश्वासघात की समस्या –

प्यार, विश्वास हर एक इन्सान को एक-दूसरे के बंधन में जखड़ता है। यह प्यार, विश्वास आखिर तक बना रहेगा इसकी गॅरंटी नहीं है। प्रेमी-प्रेमिका, बेटा-माँ के विश्वास को अंत तक नहीं निभा रहा है। वैश्वीकरण के इस युग में पैसा, करिअर, प्रतिष्ठा इसके पीछे पड़ने के कारण आज का युवा वर्ग किसी संबंध में सोचता नहीं है। उसे किसी की चिंता नहीं है। वह समाज में अपना स्थान निर्माण करने और पूँजीपति बनने के पीछे पड़ा है। इसमें नारियों की मानसिकता का कोई खयाल नहीं करता । उसे दु:ख के शिकंजे में छोड़कर चले जाते हैं। वर्मा जी ने विश्वासघात की समस्या को स्पष्ट किया है।

'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा के माध्यम से विश्वासघात की समस्या को उजागर किया है। हर्ष और वर्षा एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं। हर्ष और वर्षा सुप्रसिद्ध अभिनेता और अभिनेत्री बनने की दृष्टि से प्रयत्नशील रहते हैं। एक-दूसरे को जीवन भर साथ देने की बात भी करते हैं लेकिन हर्ष असफल होने के कारण आत्महत्या करता है। तब वर्षा कहती है – ''यह दुर्बलों और कायरों की अपनी बौनी क्षमता को पहचानने की स्वीकृति है।''[2] अत: स्पष्ट होता है कि वर्षा हर्ष की मृत्यु से पूरी तरह से टूट चुकी है। वह अपनी पीड़ा और आक्रोश को छिपा भी नहीं पाती –

---

1. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 77
2. वही, पृष्ठ – 549

"आत्महत्या करनेवाले को पता नहीं होता कि अपने निकटतम लोगों को वह सर्वग्रासी दु:ख के शिकंजे में कसा छोड़ रहा है।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि हर्ष की मृत्यु से वर्षा पूरी तरह से टूट चुकी है। हर्ष ने वर्षा के साथ विश्वासघात किया है। वर्मा जी ने वर्षा के माध्यम से विश्वासघात की समस्या को उजागर किया है और यह भी सूचित किया है कि एक युवती को अपना जीवन साथी चुनते वक्त सावधानी बरतनी चाहिए। दुर्भाग्यवश कोई मुसीबत आ ही गयी तो उस पर मात करने की हिम्मत भी रखनी चाहिए ताकि खुद को लाचार, बेबस और असहाय ना बनाते हुए अपना जीवन स्वाभिमान के साथ जीने में समर्थ है।

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में बेटा अपनी माँ का विश्वासघात करता है। पढ़ा-लिखा नील नौकरी की तलाश में मुंबई जाता है और जल्द ही जल्द अमीर बनने की लालच में वेश्या व्यवसाय करने का निर्णय लेता है। गाँव में नील की माँ अकेली रहती है। कुछ दिन नील के पास रहने के लिए वह मुंबई में आती है। बेटे की तरक्की देखकर खुश होती है। माँ को नील किस तरह का व्यवसाय करता है यह मालूम होता है। अत: बेटा अपने जीवन में अब स्थिर हो चुका है यह सोचकर माँ नील की शादी करवाना चाहती है। इस दरम्यान माँ की मुलाकात पहले पारुल और बाद में पारुल का भाई नितिन से होती है, तब नील की असलियत माँ के सामने आ जाती है। उसके दिल को ठेंस पहुँचती है। नील भी काफी शर्मिंदा होता है लेकिन वक्त और हालात ने सबकुछ बदल दिया था। माँ इतनी आहत हो जाती है कि वह नील से कहती है - "इसी दिन के लिए तुझे पाल-पोसकर बड़ा किया था? ... उपर जाने पर तेरा बाप पूछेगा, तो क्या जवाब दूँगी।"[2] अत: स्पष्ट है कि नील के इस रूप को देख कर माँ को बहुत बड़ा सदमा पहुँचता है। नील माँ को शांत करने की कोशिश करता है तब माँ नील पर चिल्लाती है - "जी चाहता है, धरती फट जाए और मैं जीते जी उसमें समा जाऊँ ... दुनिया में किसी माँ की कोख पर ऐसी कालिख नहीं लगी होगी ...।"[3] इस तरह बेटे के इस दुर्गुण को देखकर माँ रो-रो कर विवश बन जाती है, वह

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 549
2. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 204
3. वही

नील का मुँह तक देखना नहीं चाहती। इस तरह नील अपनी माँ का विश्वासघात करता है। इकलौता बेटा नील बुढ़ापे में अपनी माँ का विश्वासघात करता है।

4.5.5 प्रेम की समस्या –

प्रेम मानव हृदय की सबसे उदात्त और पवित्र भावना है। प्रेम हो जाता है, वह किया नहीं जाता और हो जाने पर फिर उसे भुलाया नहीं जाता। प्रेम जैसी उदात्त भावना को व्यक्त करते हुए बिजली प्रभा प्रकाश लिखती हैं – ''प्रेम जीवन का अमृत है। यदी कहीं पूर्णता है तो वो प्रेम में ही है। प्रेम जीवन का अभिन्न अंग है। इसकी व्यापकता सभी जगह है। इसमें वासना की गंध नहीं होती, अत: यह एकनिष्ठ प्रेम सच्चा और पवित्र होता है।''[1] प्रेम करनेवाले प्रेमी और प्रेमिकाएँ प्रेम में पड़ने पर उसका परिवर्तन विवाह में करना चाहते हैं लेकिन कभी-कभी इसमें अनेक बाधाएँ भी उत्पन्न होती हैं। अत: प्रेम में असफलता हाथ आती है। वर्मा जी के उपन्यास में यही समस्या दिखाई देती है।

सुरेंद्र वर्मा के 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास की युवती मिस दिव्या कत्याल के द्वारा प्रेम की समस्या को स्पष्ट किया है। दिव्या कत्याल पढ़ी-लिखी नौकरीपेशा नारी है। दिव्या प्रशांत को दिल से चाहती है। उसके साथ शादी करके घर बसाना चाहती है। प्रशांत के परिवार वालों को दिव्या पसंद नहीं है। परिवार वालों ने दूसरी युवती से शादी पक्की की है। ''सुहासिनी सान्याल से। प्रशांत के परिवार ने यह संबंध स्वीकार कर लिया है।''[2] प्रशांत भी कई और के साथ जुड़ गया है। दिव्या प्रशांत के साथ शादी करना चाहती है लेकिन दिव्या जबरदस्ती से शादी नहीं करना चाहती है। प्रशांत अपनी प्रेमिका दिव्या के साथ फरेब करता है, उसके प्यार का मजाक उड़ाता है और बेहिचक दूसरी जगह शादी के लिए तैयार हो जाता है। प्रशांत का किसी और के साथ जुड़ जाना दिव्या सह नहीं पाती है, इस कारण से वह अंदर से पूरी तरह टूट जाती है। प्रशांत के सिवा किसी और का विचार भी वह नहीं करती है। दिव्या प्रशांत के साथ संबंध व्यवस्थित करने के लिए बार-बार खत भेजती है। इसका

---

1. बिजली प्रभा प्रकाश – जैनेंद्र के उपन्यासों में नारी चरित्रों का मनोवैज्ञानिक धरातल, पृष्ठ – 105
2. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 57

उत्तर प्रशांत तीसरे व्यक्ति से देता है - ''प्रिय दिव्या, सबसे पहले तुम्हें सूचना देना मेरा कर्तव्य है कि पिछले कुछ समय से मेरी भावनाओं का केंद्र कोई और व्यक्ति है। यह संबंध जल्दी ही एक सामाजिक रिश्ते में बदल रहा है।''[1] इस कथन से स्पष्ट होता है कि, प्रशांत दिव्या के साथ जुड़ा हुआ प्रेमरुपी धागा एक ही खत में तोड़ देता है। इतने दिनों का प्रेम एक कागज के टुकड़े के माध्यम से हमेशा-हमेशा के लिए खत्म कर देता है। दिव्या की कोई फिक्र उसे नहीं है। इस तरह दिव्या के माध्यम से प्रेम की समस्या का चित्रण वर्मा जी ने किया है।

4.5.6 अतृप्त काम की समस्या -

यौन संतुष्टि दांपत्य-जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण मूलाधार है। सुखी वैवाहिक जीवन के लिए यौन-भावनाओं की तृप्ति या संतुष्टि का होना जरूरी है। रेखा राजवंशी लिखती हैं कि, ''विवाह जैसी संस्था का निर्माण ही इसीलिए हुआ कि स्त्री और पुरुष संयम और नियम पूर्वक एक-दूसरे के साथ सेक्स का संपूर्ण आनंद ले सके और सामाजिक मर्यादाओं और नियमों का भी पालन होता रहे।''[2] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि दांपत्य जीवन में तृप्त काम संबंध महत्त्वपूर्ण होता है अपितु यह बात समाज के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। प्रेम और कामवासना जीवन की ऐसी वृत्तियाँ हैं, जिसकी अतृप्ति निराशा, कुंठा, विसंगति को जन्म देती है। व्यक्ति की अतृप्त इच्छा, कामना उसके व्यक्तित्व में ऐसा तीव्र विद्रोह, आक्रोश, द्वंद्व उद्वेलित कर देती है कि उसमें असंतुलन आ जाता है। कहीं कहीं नारियाँ अपने परिवार के प्रति अरुचि दिखाती हैं और अन्य पुरुषों से संबंध रखने में कामयाब होती हैं। डॉ. लाल साहब सिंह के शब्दों में - ''गृह कार्य के प्रति अरुचि के साथ ही वह उपभोग के लिए प्रवृत्त हो रही है।''[3] अत: स्पष्ट होता है कि पढ़ी-लिखी नारी पति के साथ इच्छापूर्ति न होने के कारण वह घर के दहलीज को पार कर अपनी यौन तृष्टि करती है।

सुरेंद्र वर्मा के 'अंधेरे से परे' उपन्यास में अतृप्त काम की समस्या का चित्रण अधिकांश मात्रा में मिलता है। बिंदो अपने पति जित्तन की नौकरी छूट जाने

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 77
2. सं. प्रा. विश्वनाथ - गृहशोभा, जनवरी, 1999, पृष्ठ - 56
3. डॉ. लाल साहब सिंह - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युगबोध, पृष्ठ - 122

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

के कारण बहुत नाराज हो जाती है। जित्तन बार-बार नौकरी छूट जाने के कारण बहुत नाराज हो जाती है। जित्तन बार-बार नौकरी का विचार करता है। इन्हीं विचारों से वह कुंठित, निराश हो जाता है। इसी उदासीनता के कारण जित्तन बिंदो की यौन तृप्ति और परिवार के प्रति अपनी भूमिका भी अदा नहीं करता है। इसी कारण बिंदो शरीर विक्रय में रम जाती है। वह धीरे-धीरे जित्तन के संबंधों को तोड़ देती है। यौन तृप्ति के लिए मछली की तरह तड़पती है। वह अपनी ममा से कहती है - ''मैं कुछ नहीं कर सकती। मैं विवश हूँ। मैं अपनी भावनाओं का कुछ नहीं कर सकती।''[1] इसी तरह बिंदो तन-मन से यौन संबंध में अपने को झोंक देती है। बिंदो बच्चे के प्रति भी दुर्लक्षित दिखाई देती है। रात के समय सज-धजकर डॉ. चड्ढा के घर जाती है। डॉ. चड्ढा से यौन संतुष्टि करवाती है। इसमें बिंदो अपने आपको इतना झोंक देती है कि परिवारवालों को इसका पता न चले इसीलिए बैंड पर छोटी-सी गुड़िया के मोटिफ वाला और पैंताने हाऊसकोट, तकिया और चादर भी रखती है। यौन तुष्टि न होने पर घिनौनी हरकतें कर, अपनी यौन क्षुधा को संतुष्टि देती है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण बिंदो है। बिंदो के चेहरे पर तृप्ति की परत झलकती हुई दिखाई देती है - ''बिंदो की पूरी शाम। कसे आलिंगन। गहरे लंबे चुंबन। चेहरे पर तृप्ति की परत।''[2] अत: बिंदो पति से यौन-तृप्ति न होने के कारण घर-परिवार को भूल कर अपने यौन क्षुधा को शांत करने के लिए इस तरह की हरकतों का इस्तेमाल करती है।

प्रस्तुत उपन्यास की मधु का पति रोहित कंपनी के किसी काम के कारण बाहर जाता है तो मधु के यौन संबंधों में बाधा आती है, तो वह अतृप्त काम की पूर्ति के लिए गुलशन का इस्तेमाल करती है। मधु का एक पल भी गुलशन के बिना नहीं कटता। मधु को एक बच्ची भी है। फिर भी रोहित से कहीं अधिक उसका मन गुलशन में रमता है। मधु कहती है - ''अपने संबंधों को लेकर हमें अब कुछ फैसला कर लेना चाहिए। जहाँ तक मेरी बात है मैं बिल्कुल निश्चिंत हूँ कि तुम्हारे बिना अब ...।''[3] अत: स्पष्ट होता है कि किसी कारणवश पति बाहर जाता है या यौन तृष्टि में नाकामयाब होता है तो अधिकतर नारियाँ अन्य पुरुषों से यौन तृप्ति करती हैं।

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 102
2. वही, पृष्ठ - 114
3. वही, पृष्ठ - 144

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' की नारियाँ आज पुरुष-वेश्या की सहायता से यौन तृप्ति करती है। महानगर की धनाढ्य, पूँजीपति युवतियाँ, औरतें अपने पति से यौन अतृप्ति के कारण घायल बनकर पुरुष वेश्या के माध्यम से यौन तृप्ति का मार्ग अपनाती है। नील एम्.ए. तक पढ़ा है और आगे पीएच्.डी. करना चाहता है। कुमुद की नील के साथ अच्छी जान-पहचान होती है। कुमुद यौन तृप्ति के लिए लालायित है। वह नील से अपनी यौन तृप्ति करती है। यौन इच्छाओं से प्रेरित युवतियाँ अपने पति से खुश न होनेवाली औरतें नील से संपर्क करती हैं। नील द्वारा यौन-संबंधों की इच्छा पूर्ति के लिए काफी रुपये खर्च करती है, अपने परिवार का खयाल नहीं करती। नील रेट फिक्स करता है - "एक बुकिंग के तीन हजार और वीक एंड के छह हजार।"[1] उसी तरह नील शहनाज को भी अपने रेट बताता है - "करीब दो घंटे की एक शाम का मुआवजा पांच हजार होगा ... पूरा वीक एंड इसका दुगुना होगा, मुंबई के बाहर जाने पर तिगुना।"[2] अत: स्पष्ट होता है कि अपने पति द्वारा असंतुष्ट होने के कारण औरतें नील जैसे युवक का सहारा लेकर अपनी यौन तृप्ति करती है।

पारुल विवाह-बाह्य यौन संबंध रखती है। उसकी शादी हुए कुछ ही साल हो गए हैं। वह अपने पति जयंत के साथ खुश नहीं है। अपने पति के काम-संबंध इच्छाओं से वह तृप्त नहीं है। अत: इसी कारण वह नील के साथ यौन संबंध रखकर अपनी काम-संबंधी इच्छाओं की तृप्ति करती है। अपने पति से वह नाराज है। इस बारे में वह नील से कहती है - "मैंने तन मन की कितनी यंत्रणा सही है, मैं तुम्हें शब्दों में बता नहीं पाऊँगी। मैं जैसे जलते रेगिस्तान में जी रही थी ...।"[3] इस तरह पारुल भी काम संबंधों में नील से दूर जाना नहीं चाहती है। वह कहती है - "तुम शायद न मानों, पर विश्वास करो, मैं अपने ईश्वर से झूठ बोल सकती हूँ, पर तुमसे नहीं। प्रेम क्या होता है, तुमसे मिलने से पहले मैं नहीं जानती थी।"[4] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि ईश्वर और पति से जो नहीं मिला वह परपुरुष के संपर्क में आने से मिलता है याने यौन संतुष्टि। पारुल पति जयंत की बीमारी के कारण तन-मन से

---

1. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 132
2. वही
3. वही, पृष्ठ - 137
4. वही

कुम्हला गयी है। इस तरह अपने पति से यौन तृप्ति न होने के कारण नील से संबंध रखती है।

प्रस्तुत उपन्यास की युवती यास्मीन अपने पति से खुश नहीं है। यास्मीन अकेलेपन को काटने के लिए सेक्स में डूबना चाहती है लेकिन पति साथ नहीं देता। वह कहती है - ''वह सिर्फ नर्म जिंदगी चाहता था। ... सुबह ग्यारह बजे से जिन पीना, लंच के बाद एयरकंडीशनिंग में सोना, रमी खेलना ... शादी के सालभर के भीतर उसकी तोंद निकलना, मैंने सुधरने के लिए उसे तीन महीने का प्रोबेशन दिया। नालायक समझा कि मैं मज़ाक कर रही हूँ। इक्यानवें दिन मैंने उसे दरवाजा दिखा दिया।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि पति-पत्नी के विचारों में समानता न होने के कारण यास्मीन असंतुष्ट है। उसकी हमेशा एक ही मांग है - यौन तृप्ति। वह भरपूर पैसा खर्च करके नील के साथ सेक्स संबंध स्थापित करती है। यास्मीन सेक्स में बाधा लानेवाले अपने पति को तलाक भी देती है। निष्कर्षत: कहना सही होगा कि अपने पति द्वारा असंतुष्ट होने के कारण ऐसी औरतें नील जैसे युवक का सहारा लेकर अपनी यौन तृप्ति करती है। आधुनिक समाज में नारी पुरुष संबंधों के शारीरिक सुख की तृप्ति के लिए सामाजिक बंधनों को चुनौती दी जाती है।

4.5.7 अशिक्षा और अज्ञान की समस्या :

देश में जितने लोग समाज में शिक्षित होते हैं उतने ही सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील होते हैं। अशिक्षा के कारण समाज में अंधविश्वासों, परम्पराओं एवं अज्ञान जनित उपक्रमों की उन्नति होती है। समाज में आज ऐसी स्थिति है कि लड़की पढ़ना लिखना चाहती है लेकिन माँ-बाप उसकी पढ़ाई में दिक्कतें पैदा करते हैं। इसलिए लड़की की पढ़ाई नहीं होती या अधूरी छूट जाती है।

'मुझे चाँद चाहिए' की नायिका वर्षा वशिष्ठ एक ब्राह्मण परिवार की पढ़ी-लिखी युवती है। वर्षा के घर की आर्थिक परिस्थिती अच्छी नहीं हैं कि जो चीज माँगे वह तुरंत मिल जाए। वैसे वर्षा का ज्यादा पढ़ना-लिखना उसकी माँ और पिताजी दोनों को भी पसंद नाहीं है। वर्षा नाटक और फिल्म क्षेत्र में अपना कैरियर

---

1. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 99

करना चाहती है लेकिन उसकी माँ और महादेव की पत्नी मोहिनी अशिक्षित या अज्ञान के कारण वर्षा के हर एक निर्णय में असहमति दर्शाते हैं। उसके पिताजी और भाई जल्द-से-जल्द वर्षा की शादी करवाना चाहते हैं। दिव्या कत्याल वर्षा को खत भेजकर लखनऊ बुलाती है। माँ बीमार होने के कारण उसे लखनऊ जाने से रोकती है। वर्षा की माँ का यह बीमारपन एक नाटक है। वर्षा को किसी न किसी कारण से रोकना चाहती है। माँ वर्षा की भर्त्सना करते हुए कहती हैं - ''देखो तो कुलच्छनी को ... अब बुढ़ापे में मुझे कुजात के हाथ का खाना खिलाएगी। ... अरे नासपीटी भले है तेरे बाप ... कोई और होता तो दुरमुट से कूटके रख देता ... नहीं तो पैदा होते ही टेंटुवा दबवा देता।''[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि वर्षा की माँ अज्ञानी और अशिक्षित है। वर्षा के घर में दो बहने और भाई महादेव की पत्नी है फिर भी माँ वर्षा को स्कूल में पढ़ने जाने को मना करती है। इस जगह अगर शिक्षित माँ होती तो पहले कैरिअर को महत्त्व देती और पढ़ाई के लिए सहमति देती।

वर्षा घरवालों से इजाजत न लेते हुए लखनऊ चली जाती है। लखनऊ से वापस आते समय वर्षा के माँ के मन में आनाप-शनाप आता है। उसकी माँ को लगता है कि वर्षा का 'घर से बाहर जाना याने हाथ से निकलना है। लेकिन वर्षा सारे बन्धन तोड़कर अपनी अभिनय तपस्या के पीछे लगती है। माँ वर्षा को कोसती हुई कहती है - ''जा के मर वहीं, जहाँ महीना भर काटा है... बडे इसकी चुटिया पकड़ के ढ़केल दो सड़क पर... पाप कटे।''[2] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि माँ की दृष्टि से या उसके अज्ञान के कारण वर्षा का एक महीना बाहर बीताना याने गैरमार्ग को लगना है। महादेव भाई की पत्नी वर्षा को 'नौटंकी बाज' कहकर हिकारत से देखती है। वह वर्षा के खिलाफ एक षड़यंत्र रचति है। उसके साथ छलकपट करती है, वर्षा की किताबों को फाड कर तितर-बितर कर देती है। तब मोहिनी का शिक्षा और अज्ञान सामने आता है - ''मोहिनी सिलबिल का सुखा कपड़ा छत पर फेंकती, उसकी किताबों को तितर-बितर कर देती, सिलबिल के सामने खाने की थाली पटकती, रोटी जलाकर देती।''[3] अत: स्पष्ट होता है कि वर्षा का पढ़ाई करना और घर की

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 65
2. वही, पृष्ठ - 74
3. वही, पृष्ठ - 76

दहलीज को लाँघना उसे पसंद नहीं है। वर्षा इस माहौल से तंग आकर दिल्ली जाती है। वह फिर शाहजहाँपुर कभी वापस नहीं आना चाहती है। इसी अज्ञान और अशिक्षा के कारण वह खुद भी शिक्षा प्राप्त नहीं करती है और दूसरा करता है उसे पीछे खींचने का काम करती है। नारी आज घर की दहलीज पार नहीं कर रही हैं क्योंकि उसे रोका जा रहा है। फिर कैसे होगी नारी आत्मनिर्भर या स्वतंत्र अस्तित्ववादी।

4.5.8 नारी स्वतंत्रता की समस्या :

सदियों से चली आ रही इस समस्या से नारी हर युग में जूझती रही है। भारतीय समाज व्यवस्था ज्यादातर पुरुष प्रधान होने से नारी को यहाँ दुय्यम स्थान ही मिलता रहा है। जितने अधिकार पुरुषों को प्राप्त हुए है उतने नारी को नहीं।

नारी ने अब समान अधिकार तथा अपने स्वातंत्र्य के प्रति आवाज उठायी है । उसे किसी-न-किसी रूप से दबाने की कोशिश की गयी है। नारी भी अपने अधिकार तथा स्वतंत्रता के प्रति सजग है तथा प्रतिकूल परिस्थितियों से खुद राह निकालती हुई नजर आती है। पुरुष और स्त्री में कोई मौलिक असमानता नहीं है, दोनों भी मानव है। स्त्री और पुरुष की प्रवृत्ति और स्वभाव में थोडा-बहुत अंतर हो, पर उनके संस्कार और उनकी सामाजिकता एक ही स्तर पर आधारित है। रामरतन भटनागर ने कहा है - "वास्तव में बींसवी शताब्दी नारी जागरण की शताब्दी रही है और नारी की मुक्ति की कल्पना कही है।"[1] अत: स्पष्ट है फिर भी वास्तविक रूप से समाज में पुरुष जैसा स्थान नारी को नहीं है। सामाजिक प्रतिक्रियाएँ उसे पुरुष के बराबर का अधिकार नहीं दिया जा रहा है।

सुरेंद्र वर्मा के 'अंधेरे से परे' इस उपन्यास में नारी स्वतंत्रता की समस्या का जिक्र किया है। रोहित द्वारा एक पार्टी का आयोजन किया जाता है। मधु, रोहित और गुलशन इसमें शामिल होते हैं। रोहित मधु से सभी की पहचान करवा देता है। पर मधु को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। वह गुलशन के साथ

---

1. रामरतन भटनागर - जैनेंद्र और उनके उपन्यास, पृष्ठ - 56

ड्राइंगरुम में जाती है। उसके साथ उसका पति रोहित भी है। इसमें गुलशन की पहचान का कोई भी नहीं हैं।

गुलशन आते-जाते दाम्पत्यों की तरफ देखता कहता है। इतने में एक सज्जन लाईट ऑन करके गुलशन के बाजू में आ खड़ा रहता है। पार्टी में शामिल महिलाएँ अन्य पुरुषों के साथ नाच-गाना, शराब पीना यह उस सज्जन को देखा नहीं जाता। उस कोने में खड़ी महिला की ओर इशारा करते हुए कहता है - ''बिना किसी बंधन के पूरी स्वतंत्रता लेकर आखिर नारी जाति करना क्या चाहती है?''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि नारी को दुय्यम स्थान दिया गया है। उस सज्जन का मानना है कि स्त्री के कारण अनेक समस्याएँ उलझ गयी है। स्त्री को स्वातंत्र्य मिलने के कारण वह बंधन मुक्त होकर पुरुष से कई आगे निकल गयी है। अपने आसपास की स्थिति देखकर पचास साल के अनुभवों को बताते वक्त गुल्लू को कहता है - ''वास्तव में दुनिया में शांतिभरी जिंदगी उसी दिन से मुश्किल होने लगी, जिस दिन स्त्री ने घर की चार दीवार से निकलकर पुरुष के साथ कंधा भिडाया।''[2] अत: स्पष्ट होता है कि नारी को जिस दिन से स्वातंत्र्य मिला है उसी दिन से शांतिभरी जिंदगी खत्म हुई है ऐसा सज्जन का मानना है लेकिन यह सरासर गलत है क्योंकि जो पुरुष कर सकता है वह स्त्री क्यों नहीं कर सकती ? उसे समानता का अधिकार मिल जाना चाहिए। उसके आगे चलकर वे सज्जन कहते हैं - ''भारत का स्वर्णिम युग कौन-सा था ? जब गृहस्वामिनी घर की लक्ष्मी मानी जाती थी।''[3] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि नारी को जबसे स्वातंत्र मिला है तब से उलझने पैदा हो गयी है ऐसा सज्जन का मानना है। अगर नारी को स्वातंत्रता नहीं मिलती तो कल्पना चावला, सुनिता विल्यम्, किरण बेदी, स्व. इंदिरा गांधी, राष्ट्रपति प्रतिभाताई पाटील जैसी कर्तृत्वान नारियाँ आसमान को छू नहीं पाती और अपने मौल्यवान कर्तृत्व से सबको प्रभावित नहीं कर पाती।

'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा कट्टर पुराणपंथी ब्राह्मण परिवार की लड़की है। वर्षा के पिताजी परंपरावादी होने के कारण वे अपनी बेटी को कहीं और जगह जाकर काम करना पसंद नहीं करते थें। वे वर्षा को स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 82
2. वही
3. वही

करने में बाधा डालते हैं। वर्षा का 'सौम्यमुद्रा' नाटक में काम करने का समाचार पाते ही पिताजी गुस्से से वर्षा से कहते हैं, ''तू नौटंकी में काम कर रही है ? कान खोलकर सुन ले, हर बात की हद होती है, आखिर हमारे घर की भी कोई इज्जत होती है।''[1] अत: स्पष्ट होता है कि पिताजी नाटक में काम करने से वर्षा को मना करतें हैं। वे वर्षा को लड़कों के साथ सार्वजनिक मंच पर नाटक में काम करने की इजाजत देना इज्जत के खिलाफ मानते हैं। वे कहते हैं – ''तेरे साथ लड़के भी काम कर रहे हैं, ... कुछ ऊँच नीच हो गया, तो हमें मुँह छिपाने को जगह नहीं मिलेगी।... लड़की की जात मिट्टी का सकोरा होता है।''[2] इस तरह वर्षा के पिताजी द्वारा उसके कैरिअर में अवरोध निर्माण होता है। वे वर्षा को लड़को के साथ काम करने से मना करते हैं। लेकिन आज नारी पुरुष के कंधे से कंधा लगाकर काम करना चाहती है। महादेवभाई भी सबकुछ छोड़कर घर आने के लिए कहता है नहीं तो घर से तुम्हारा रिश्ता हमेशा के लिए टूट जाएगा। वर्षा के विवाह बंधन को नकारने पर उसके पिताजी श्री शर्मा ने उससे बोलना बन्द किया था, महादेव भाई भी उससे नाराज हो गए थें। वर्षा नाटक में काम करने के लिए लखनऊ जाना चाहती है लेकिन पिताजी उसे इजाजत नहीं देते हैं। परिवार वाले वर्षा की शादी दुहाजू नायक तहसीलदार नर्मदा शंकर के साथ करना चाहते हैं जिसे एक बच्चा भी है। वर्षा शादी करने से इन्कार कर देती है तब पिताजी वर्षा को नौकरी भी करने के लिए इन्कार कर देते हैं। पिताजी वर्षा को कहते हैं – ''हमारे वंश में लड़की ने कभी नौकरी नहीं की है।''[3] अत: स्पष्ट होता है कि वर्षा मुक्त होकर जीवन जीना चाहती है लेकिन पिताजी उसे हर एक निर्णय में अवरोध डालते हैं। निष्कर्षत: नारी स्वतंत्र होकर उन्मुक्त अर्थात जीवन जीना चाहती है लेकिन पुरुष नारी स्वतंत्रता में बाधा डाल रहे हैं। पुरुष नारी को पूरी स्वतंत्रता देने में आज भी हिचकिचाते हैं। लेकिन नारी अपना बरा-बरी का अधिकार पाना चाहती है।

4.5.9 अर्थाभाव की समस्या –

आज नारी के सामने अर्थाभाव की समस्या भी एक गंभीर समस्या है। अर्थाभाव कई समस्याओं को जन्म देता है। आज वह परिस्थिति बन गयी है कि

---

1. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 32
2. वही
3. वही, पृष्ठ – 77

अमीर अधिक अमीर बन रहा है और गरीब अधिक ही गरीब बनता जा रहा है। अगर किसी व्यक्ति के पास अधिक पैसे न हो तो उसके सगे-संबंधी उससे दूर भागते हुए नजर आते हैं। इतना ही नहीं पति-पत्नी के रिश्ते में भी दरार पड़ी हुई दिखाई देती हैं। डॉ. सुरेश गायकवाड के शब्दों में - ''मनुष्य को अपना जीवन यापन करने के लिए 'अर्थ' का साधन रूप में इस्तेमाल करना पड़ता है और अर्थ प्राप्ति के लिए उसे कोई न कोई काम करना पड़ता है। अर्थ मनुष्य का जीवन का मूलाधार है।''[1] अत: अर्थाभाव की समस्या अनेक समस्याओं को जन्म देती है। वर्मा जी के उपन्यासों की नारियाँ भी इन समस्याओं का सामना करती हुई नजर आती है।

'अंधेरे से परे' की बिंदो को अर्थाभाव का सामना करना पड़ता है। जित्तन असिस्टेंट मैनेजर की नौकरी करता था। लेकिन उसे पैसे लेने के जुर्म में सस्पेंड किया जाता है। जित्तन दूसरी नौकरी करना नहीं चाहता है। परिवार की जिम्मेदारी अब बिंदो पर आ गयी थी। सोमू की पढ़ाई का खर्चा भी बिंदो को करना पढ़ता है। बिंदो एक्सपोर्ट सेक्शन में नौकरी करती है। इससे महिनेभर का खर्चा भी नहीं निकलता था। जित्तन ने जो कमाया था वह कब का ही समाप्त हो चुका था। अर्थाभाव के कारण बिंदो तंग आ चुकी है। बिंदो घुस्से से कहती है - ''सस्पेंड हुए पूरा साल होने को आ रहा है। जो थोडा-सा बचाया था, खा-पीकर बराबर कर चुके हैं ... अपना नहीं, मेरा नहीं, कम से कम बच्चे की तो सोचो।''[2] अत: स्पष्ट होता है कि बिंदो को घर की जिम्मेदारियाँ निभाना अब मुश्किल हो गया है। इसके मूल में अर्थाभाव है। जित्तन को बिंदो के इस कर्तृत्व पर गर्व होना चाहिए लेकिन ऐसा नहीं होता अपनी सारी जिम्मेदारियाँ बिंदो के पास सौंपकर मित्र मुकुंद के घर हमेशा के लिए जाता है। बिंदो अर्थाभाव के कारण बहक जाती है और डॉ. चड्ढा के साथ अवैध संबंध रखती है। शुरू में बच्चे की ओर ध्यान देती है। जब बिंदो शरीर विक्रय में रम जाती है तब बच्चे के प्रति माँ की जिम्मेदारी भी नहीं निभा पाती। इस तरह बिंदो के सामने भी अर्थाभाव की समस्या खड़ी होती है।

---

1. सुरेश गायकवाड - जैनेंद्र के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याएँ, पृष्ठ - 139
2. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 13

'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा का परिवार बड़ा था। अत: वर्षा के पिताजी जितना कमाते थे उस पर उनके परिवार का गुजारा हो पाना कठिन था। वर्षा को चार भाई-बहन है उनकी पढ़ाई का खर्चा बहुत था। इसलिए वर्षा के पिताजी टयूशन लेते थें। आर्थिक अभाव के कारण घर के सदस्यों की जरूरतें पूरी न हो पाती थी। बीमार होने के बावजूद वर्षा के पिता ट्यूशन लेते ही रहते हैं। पिताजी की यह स्थिति वर्षा को देखी नहीं जाती है। वह घर की आर्थिक स्थिति समझती है और खुद भी ट्यूशन लेना शुरू करती है। अत: अर्थाभाव के कारण ही वर्षा को ट्यूशन लेकर कुछ रुपये कमाना अनिवार्य हो जाता है। लेकिन पिताजी को बहुत दु:ख होता है। पिताजी के पूछने पर वर्षा कहती है, 'दो पैसे और आएँगे, तो घरकी मदद होगी।' यह सुनकर पिताजी को कवि कुलदीपक की पंक्ति याद आती है, "वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सह लेता है, परंतु अपनी छाया से दूसरों को बचाता है। मैं अपनी बेटी को ही नहीं बचा पा रहा हूँ। उन्होंने गहरी सास के साथ सोचा।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि आर्थिक अभाव के कारण परेशान हो उठी वर्षा को दिव्या कत्याल की मदद से अपनी पढ़ाई पूरी करनी पड़ती है। पिताजी की ओर से भाई की ओर से वर्षा की पढ़ाई में कोई मदद नहीं होती है परिणामत: वर्षा के पढ़ाई में बाधा आती है वह ठीक तरह पढ़ाई पूरी नहीं कर पाती है। इस प्रकार वर्मा जी ने वर्षा के माध्यम से अर्थाभाव की समस्या को स्पष्ट किया है।

4.5.10 वैवाहिक जीवन में तान-तनाव की समस्या -

पारिवारिक जीवन का प्रमुख आधार वैवाहिक जीवन है। अलग-अलग माहौल में पली-बड़ी दो स्वतंत्र हस्तियाँ स्त्री और पुरुष विवाह जैसे पवित्र बंधन में बंधकर जीवन भर के लिए एक-दूसरे के सुख-दुख के साथी बन जाते हैं। पति-पत्नी का यह रिश्ता प्यार, मोहब्बत, विश्वास और आपसी समझदारी पर ही फलता-फूलता तथा दृढ बनता है। प्रा. अर्जुन घरत का कहना है - "पति-पत्नी के बीच सामंजस्यपूर्ण वातावरण नहीं है तो परिवार की स्थिति और दोनों का वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं रहता।"[2] अत: स्पष्ट होता है कि पति-पत्नी का आपसी प्यार, विश्वास,

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 21
2. प्रा. अर्जुन घरत - नागार्जुन के नारी पात्र, पृष्ठ - 122

एक-दूसरे को समझने की क्षमता आदि पर वैवाहिक जीवन निर्भर रहता है। मगर इन्हीं बातों की कमी हो तो दांपत्य संबंधों में तनाव निर्माण होते हैं। वर्मा-जी के उपन्यासों की नारियाँ दांपत्य जीवन में तनाव महसूस करती है।

सुरेंद्र वर्मा के 'अंधेरे से परे' उपन्यास में दुर्बल आर्थिक परिस्थिति के कारण बिंदो और जित्तन के परिवारिक संबंधों में तान-तनाव का निर्माण होता है। दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी दोनों ही पढ़े-लिखे समझदार हो तो परस्पर समझौते के आधार पर जीवन को सुखमय बनाने में कोई दिक्कते नहीं आती है। बिंदो दाम्पत्य जीवन में कुछ अभाव को महसूस कर उसे रहने छोड देने की बात करती है। जित्तन असिस्टंट मैनेजर की नौकरी छुट जाने के बाद दूसरी नौकरी करना नहीं चाहता है। बिंदो की सहेली लतिका के डैडी बिंदो के कहने पर स्टेनलेस स्टील के बर्तनों का ऑर्डर लेने का काम देते हैं। जित्तन इतने कम पैसों की और घर-घर जाकर बर्तन बिकने के काम को अस्वीकार करता है। इस बात को लेकर बिंदो और जित्तन में हर रोज झगड़ा होता है। बिंदो का परिवार के प्रति आपसी तनाव निर्माण होता है। उसे सोमू नामक छोटा बच्चा है। बच्चे की परवरिश भी ठीक तरह से नहीं करती है। बिंदो इस रोज-रोज की तनाव भरे माहौल से तंग आती है। बिंदो ममा से कहती है - ''मैं कुछ नहीं कर सकती। मैं विवश हूँ। मैं अपनी भावनाओं का कुछ नहीं कर सकती।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि बिंदो जित्तन के इस तरह के बर्ताव से तंग आकर अपनी अतृप्त आकांक्षाओं को तृप्त करने के लिए गैरमार्ग का अवलंब करती है। हर स्त्री को लगता है कि अपना पति नौकरी करें कुछ कमाएँ। दोनों मे समझ लेने की मानसिकता न हो तो इस तरह के झगड़े होते रहते हैं।

जित्तन घर की जिम्मेदारियों से छुटकारा पाने के लिए मित्र मुकुंद के घर जाता है। मुकुंद और उसकी पत्नी चित्रा जित्तन को घर में सहारा देते हैं, उसे एक कमरा भी देते हैं। गुल्लू उसे लाने के लिए जाता है पर जित्तन घर आने के लिए तैयार नहीं है। गुल्लू समझा-बुझाकर घर ले आता है। घर आते ही बिंदो आरोप के स्वर में पूछती है - ''तो तुम सही-सलामत हो?''[2] इस कथन से स्पष्ट होता है कि बिंदो

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 102
3. वही, पृष्ठ - 20

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

को जित्तन का इस तरह दूसरों के घर जाना अच्छा नहीं लगता है। उपन्यास के शुरु से अंत तक पति-पत्नी में तान-तनाव दिखाई देते हैं।

सुरेंद्र वर्मा के 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में पारिवारिक संबंधों में तनाव की समस्या का गहराई से चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में मि. सहगल की परित्यक्त्या बेटी सतवंती के माध्यम से वैवाहिक जीवन में आये तान-तनाव पर लेखक ने चिंतन किया है। सतवंती के माँ की मृत्यु होने के बाद मि. सहगल सतवंती का अस्वीकार करते हैं। सतवंती की शादी होती है। पति-पत्नी में तान-तनाव आने के कारण विवाह विच्छेद हो जाता है। सतवंती मायके आती है परंतु सौतेली माँ और उसकी बार बार अनबन होती है। इस प्रतिकूल परिस्थिति के कारण उसका आत्मविश्वास कम होता है। सतवंती अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है। वह वर्षा से कहती है - "मम्मी से कहियेगा मैं जगह ढूँढ़ रही हूँ, तीस तारीख तक खाली कर दूँगी।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि सतवंती की माँ और पति के साथ तनावभरे संबंध है। पति के विवाहबाह्य संबंध होने के कारण उसने सतवंती को तलाक दिया था। इसी कारण वह मायके आकर रहती है।

अनुपमा - चतुर्भुज के दाम्पत्य-जीवन में भी तनाव बढ़ते हैं। विवाहोपरांत दोनों के संबंधों में कटुता आती है। बिस्तर पर उसके साथ सोने वाली अनुपमा को चतुर्भुज की बातों में कोई रुचि नहीं लगती है। वह कहती है - "मेरे तथाकथित आकर्षण के पीछे चतुर्भुज के आम-आदमी होने का तथ्य था, जिसके आस-पास मेरी रंगमंचीय गतिविधियाँ केन्द्रित थी। मैंने अपने वैचारिक सरोकार को ज्यादा ही खींच लिया।"[2] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि अनुपमा चतुर्भुज के बाहरी सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उसका चयन करती है। अनुपमा की माँ अनुपमा की दूसरी शादी करना चाहती है। पति-पत्नी के संबंधों में कटुता आने के कारण अनुपमा उमेश के साथ रजिस्टर शादी करती है।

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' की यास्मीन यौन संबंधों में अधिक रूचि रखती है। वह नील को अपने 'गोल्ट मिस्ट' के अठारहवीं मंजिल पर स्थित फ्लैट में

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 204
2. वही, पृष्ठ - 309

यौन संबंध स्थापित करने के लिए बुलाती है। बीस हजार रुपये की पूँजी पर वह अपने घर में कंपनी शुरु कर देती है। उसने शादी करके धोखा खाया है। वह अपने पति से खुश नहीं है – ''वह नर्म जिंदगी चाहता था। सुबह ग्यारह बजे से जीन पीना, लंच के बाद एअर कंडिशनिंग में सोना, फिर रमी खेलना ... शादी के साल भर के भीतर उसकी तोंद निकलना, मैंने उसे सुधरने का तीन महीने का प्रोबेशन दिया, नालायक समझा कि मैं मज़ाक कर रही हूँ। इक्यानवें दिन मैंने उसे दरवाजा दिखा दिया।''[1] इससे स्पष्ट होता है कि पति की तोंद कम न होने के कारण वैवाहिक जीवन में तान-तनाव निर्माण होते हैं। इस तरह नील के साथ यौन-संबंध स्थापित करने वाली यास्मीन यौन-तृप्ति में रोड़ा अटकाने वाले पति के साथ हमेशा के लिए संबंध तोड़ देती है।

निष्कर्षत: स्पष्ट होता है कि पति-पत्नी संबंधों में परस्पर सम्मान का भाव हो तो दांपत्य संबंधों में प्रेम की गहनता बनी रहती है, नहीं तो तनाव की। अत: स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यासों में वैवाहिक जीवन के कारण तान-तनाव की समस्या पर वर्मा जी ने प्रकाश डाला है।

4.5.11 मानसिक ग्रंथियों (मनोरुग्ण) की समस्या –

विवेच्य उपन्यासों में नारी जीवन से संबंधित मानसिक ग्रंथियों की समस्या का चित्रण भी परिलक्षित होता है। 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में मानव की दमित वासनाओं, कुंठाओं एवं वर्जनाओं का आलेखन करने में चित्रित मनोरुग्ण नारी का विश्लेषण करते समय नारी की मानसिकता का आकलन करना उचित है।

'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा का जन्म कट्टर पुराणपंथी ब्राह्मण परिवार में हुआ है। वर्षा पढ़ाई में होशियार लड़की है। बी.ए. तक पढ़ाई पूरी हो चुकी है। वर्षा आत्मनिर्भर बनकर खुद के पाँवों पर खड़ी होने के लिए पढ़ाई जारी रखना चाहती है। जब वर्षा अभिनय के क्षेत्र में जाती है तब उसके जीवन में चार युवक आते हैं। हर युवक के संपर्क में आकर भी वह पूर्ण समर्पित नहीं हो पाती। वर्षा किसी एक पुरुष का

---

1. सुरेंद्र वर्मा – दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ – 99

स्वीकार करना चाहती है लेकिन वह मन के अनुरुप नहीं कर पाती। यदि कर पाती तो कुंठा से उभर जाती। वर्षा के घरवाले वर्षा की शादी करना चाहते हैं लेकिन वर्षा की रूचि पढ़ाई में होने के कारण विवाह बंधन में बंधना नहीं चाहती। वह स्वतंत्र अस्तित्व और आत्मनिर्भर बनने की जिद से शादी से इन्कार कर पढ़ाई जारी रखने की इच्छा व्यक्त करती है। अभिनय के क्षेत्र में कैरियर करना उचित मानती है। वह पारिवारिक माहौल से बाहर निकलना चाहती है। वह घर में घुटन महसूस करती है - ''सिलबिल ने बहुतेरा दरवाजा पीटा, चीखी-चिल्लायी, घंटे भर पानी के नल को खुला छोड़ा, खाली बाल्टी में लोटा बजाया। पर यह जाहिर होने लगा कि लाख 'उमड़ने' के बाद उसे अब 'मिट' ही जाना है।''[1] अत: स्पष्ट होता है कि वर्षा को समझनेवाला, उसे सहानुभूति देनेवाला घर में कोई नहीं है। कारण बस यह है कि वर्षा करिअर करने के बजाय शादी को हाँ कर दे।

माता-पिता वर्षा की जबरदस्ती से शादी करना चाहते हैं लेकिन वर्षा अपने विचारों पर ही अटल है। पिताजी का मानना है कि वर्षा वंश परंपरा को न तोड़कर शादी के लिए तैयार हो जाए। वर्षा का इस तरह पिताजी से सवाल-जवाब करना माँ को अच्छा नहीं लगता। माँ कहती है - ''इस छोकरी का कुछ और छोर ही नहीं मिलता। जैसे बाप के सामने तू-तड़ाक किए जाते हैं।''[2] वर्षा माता-पिता की बातों को ठुकराना नहीं चाहती है। अभिनय चाँद और हर्ष रुपी चाँद पाने के लिए उसे अपनी भावनाओं का कुछ हद तक उत्सर्ग करना पड़ता है। वर्षा हर्ष से प्रेम करती है, उससे शादी करना चाहती है लेकिन 'मुक्ति' फिल्म न बन सकने के कारण हर्ष आत्महत्या करता है। वर्षा हर्ष की मृत्यु के बाद अपने गर्भ में रहे बच्चे को जन्म देने का निर्णय लेती है। हर्ष के बीच में ही छुट जाने के कारण वह पूरी तरह टूट जाती है। वर्षा के जीवन में निराशा छा जाती है। इन सारी घटनाओं का उसके जीवन पर बुरा असर पड़ता है।

वर्षा अपने ध्येयपूर्ति हेतु अर्थात् चाँद को पाने के लिए घर छोड़कर नाटक और फिल्म में प्रवेश करती है। वह अभिनय रूपी चाँद को पाती है लेकिन हर्षरूपी चाँद को नहीं। इसी तरह वर्षा कुंठाग्रस्त होकर मानसिक मनोरुग्ण बनती है।

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 88
2. वही, पृष्ठ - 152

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका जिस तरह मानसिक समस्या से पीड़ित है उसी तरह दिव्या कत्याल भी प्रस्तुत समस्या का शिकार बनी हुई है। दिव्या रोहन से प्रेम करती है लेकिन रोहन के घरवालों को यह रिश्ता पसंद नहीं है। रोहन दिव्या को शादी के लिए तैयार करता है पर दिव्या के मन में अंतर द्वंद्व की स्थिति है कि रोहन से शादी करूँ या न करूँ? दिव्या वर्षा से कहती है – "रोहन ने पूछा है, मैं कब तक प्रतीक्षा करूँ ? मैं क्या कहूँ, मेरा मन बिल्कुल सुना है, पिछली कचोट कम हो गई है, पर आगे के लिए कोई उमंग नहीं।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि दिव्या के मन में अंतर द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। इस तरह वर्मा जी ने नारी की मानसिक मनोरुग्ण की पीड़ा का चित्रण किया है। निष्कर्षत: स्पष्ट होता है कि नारी दमित वासना, कुंठा, घुटन, तनाव विवशता आदि के कारण मानसिक मनोरुग्ण बनती हुई दृष्टिगोचर होती है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत सुरेंद्र वर्मा जी के उपन्यासों में नारी से संबंधित जिन समस्याओं का चित्रण हुआ है वे सभी समस्याएँ नारी की आम जिन्दगी से जुड़ी हुई दिखाई देती है। अर्थात् इन समस्याओं के माध्यम से समाज में व्याप्त यथार्थवादी समस्याओं को वाणी दी हैं। लेखक सुरेंद्र वर्मा ने नारी से संबंधित समस्याओं को अलग-अलग ढंग से चित्रित किया है। यह सभी समस्याएँ आज की नारियों की भी समस्याएँ है।

वर्मा जी के उपन्यासों के विवेचन से यह बात सामने आती है कि नारी किसी भी क्षेत्र में समस्या से मुक्त नहीं हैं। नारी शिक्षित होकर भी अपने जीवन में आनेवाली अनेक समस्याओं का पूरी तरह से हल नहीं कर पा रही है। प्रेम भी आज की नारी के लिए एक समस्या बन गई है। आज की युवतियाँ प्रेम में अपना सबकुछ न्यौछावर करती है उस प्रेम में भी नारी को कई बार असफलता का सामना करना पड़ता है। आर्थिक समस्याओं में उलझी हुई यह नारियाँ प्रतिकूल परिस्थितियों से राह

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 84

निकालने की कोशिश करती हुई नजर आती है। जैसे - 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा। वर्मा जी की नारियाँ आर्थिक समस्याओं का ड़टकर मुकाबला करती है। उक्त उपन्यासों के अकेलेपन से पीड़ित पात्र अपना अकेलापन काटने के लिए काम में जुड़ जाते हैं, नशापान के अधीन होते हैं, अनैतिक सम्बन्धों के अधीन होते हैं।

नारी की अशिक्षा और अज्ञान के कारण आज पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच का अंतर तथा संघर्ष बढ़ता ही जा रहा है। नई पीढ़ी पुराने खयाल, परंपरा का इतना आदर नहीं करती जितना आदर पुरानी पीढ़ी करती है। दहेज की समस्या ने आज उग्र रूप धारण कर लिया है। दहेज देने के लिए रुपयों का प्रबंध न होने के कारण बहुत-सी युवतियों को शादी योग्य उम्र होते हुए भी घर में बैठना पड़ रहा है। इसी कारण माता-पिता चैन से जीवन जी नहीं पाते। यहाँ दाम्पत्य जीवन में अभाव, घुटन, टूटन, संत्रास और उनकी आर्थिक विषमताओं की समर्थ झांकी प्रस्तुत की है। इसके साथ ही वर्मा जी ने पति-पत्नी के बीच तान-तनावों की कारणमीमांसा यथार्थता के साथ चित्रित करने का प्रयास भी किया है। इसका दूसरा भी कारण है यौन इच्छाओं से प्रेरित युवतियाँ अपने पति से खुश न होने के कारण यौन-संबंधों की इच्छा पूर्ति के लिए काफी रुपये खर्च करती हैं। आज महानगरों में पुरुष वेश्या की प्रवृत्ति का प्रचलन तेज रूप धारण कर रहा है। इस प्रकार वर्मा जी ने नारी के प्रति पुरुष का हीन दृष्टिकोण का चित्रण किया है। साथ ही पुरुष द्वारा उसका हो रहा अधिकार का हनन भी दिखाया है और नारी को उसके 'स्व', अस्मिता, अधिकार के प्रति सचेत किया है।

निष्कर्षत: कहना होगा कि सुरेंद्र वर्मा जी के उपन्यासों में नारी की विविध समस्याओं को यथार्थता के साथ अंकन किया है। साथ ही नारी समस्याओं के समाधान भी कहीं-कहीं प्रस्तुत किया है।

❑❑❑❑